सीना बा सीना - (Heart to Heart)

सीना बा सीना - (Heart to Heart)

बड़े बड़े महात्मा और संत, इत्तेफ़ाक से नही आ जाते । बल्कि ये उस समय पर आते है जब कि दुनिया को बहुत ज्यादा उनकी जरूरत होती है । जिस वक्त कि अंधकार छा जाता है, poisonous effect यानी जहरीला माद्दा विचारों के द्वारा यहाँ आसमान पर या atmosphere में समा जाता है, उस वक्त उसकी सफ़ाई की बेहद जरूरत होती है, वर्ना परिवर्तन किसी हालत में नहीं हो सकता। या की ऐसा वक्त था जब समर्थ गुरु श्रीरामचन्द्रजी महाराज, फ़तेहगढ निवासी ऐसे time पर आये जबके उनकी बहुत ज्यादा जरूरत थी। उन्होंने वो वो काम किये हैं, ऐसी ऐसी researches की हैं, कि लोग आगे चल कर जब सोचेंगे तो दंग रह जाएंगे। सबसे पहिली बात जो उन्होंने बतलाई है कि transformation या तबादला या tendencyओं को अच्छा कर देना सिर्फ़ Divine Consciousness कर सकती है, supramental नहीं कर सकता। हालांकि Shri Aurobindo जी इसकी हमेशा कोशिश ही करते रहे कि किसी तरीक़े से supramental हम इस धरती या जमीन पर पहुँचा दें, मगर वो कामयाब नहीं हुये। यही एक चीज़ है जिसको Divine Consciousness या दिव्य चैतन्यता कहते हैं। इसी से आदमी बदल सकता है और पूरी तरह से transformation हो सकता है। इसके आगे उन्होनें ये बात बताई है कि अगर मोक्ष किसी तरीक़े से लोगों को हासिल करना है तो सिवाय योग के और कोई चीज़ नहीं हो सकती। योग के माने सिर्फ़ यही है कि अपनी human consciousness को Divine consciousness में जोड़ दें। बस इसको योग कहते हैं।

अफ़सोस यह है कि हमारे यहाँ पूजा करने वाले बहुत से लोग हैं और करते भी हैं, मगर किसी ने आज तक यह नहीं सोचा कि क्या हम उससे

जुड़ भी गये? बल्कि मेरा खयाल तो ये है कि वो उससे अलहदा ही होते चले जाते हैं। ये एक अफ़सोस की और बिगड़े हुए जमाने की बात है। यही लोगों का तजुर्बा है कि तीस तीस बरस तक बराबर पूजा करते रहे, उसमें ये सब पूजाएं शामिल हैं, जिसमें कि हम, मूर्ती पूजन भी शामिल है, जप भी शामिल है, मगर मेरे पास ऐसे बहुत से लोग आये हैं और उन्होंने यही कहा कि तीस बरस की मेहनत से हम तीस second भी दिमाग को silence नहीं कर सके, मगर फ़िर भी वो उसी को करते चले जा रहे हैं। ये एक बिगड़े हुये जमाने की बात है। जब किसी पर अध:काल या विराल या downfall होता है तो सबसे पहले discriminative power यानी विवेक शक्ती बिगड़ जाती है। उसके बाद उसमे खौफ़ या fear पैदा होता है, और जहाँ ये चीज़ पैदा हुई, heart फिर उसका बिलकुल ही तहस-नहस हो जाता है। ये चीज़ हममे काफ़ी तौर पर आ चुकी, अब परिवर्तन की जरूरत है। अफ़सोस यह है कि कहते भी हैं, सुनते भी हैं पर अभी तक उनके दिल में ये बात पैदा नहीं हुई इसको हम छोडें या ना छोडें। आदत और tendency इनकी ऐसी बन गई है कि उनको छोड़ते हुए ये खयाल पैदा होता है कि ऐसा न हो कि हमारे बच्चों को या किसी को नुकसान पहुँच जाये। मगर ये उनका self created है, उनका खुद पैदा करा हुआ खयाल है कोई दिव्य खयाल नहीं है। बस इससे नहीं आते। जमाना जरूर ऐसा आ रहा है वो रफ़्ता रफ़्ता लोग योग साधना पर आयेंगे और उस चीज़ को अपनायेंगे जिसको कि सहजमार्ग system कहा है। अब मैं थोड़ी सी सहज मार्ग system की विशेषता बताता हूँ।

ये जो मैने कहा है इसके यहाँ Divinity है जो आदमी को बदल सकती है, और कोई चीज़ नहीं..। अब वो Divinity हम पैदा किस तरीक़े से करें? इसका तरीक़ा सबसे पहले तो ये है कि अगर किसी के हाथ में Transmission power है तो उसको वो इस्तमाल करे और जो शख्स जिसे आती है ऐसे शख्स के पास जाये कि अपनी ताकत से, अपनी प्राणाहुती द्वारा उस शख्स को बदलने की कोशिश करे। सबसे पहली तरकीब तो ये है। दूसरी

तरकीब इसकी ये है, कि Divinity हम subconsious mind में वो खयाल वो विचार ले ले, जो उसके join करने के लिये या उसको योग में, योग करने के लिए जरूरत है। इतना गहरा खयाल हम subconscious mind मे ला दें कि दूसरी चीज़ हमारे खयाल ही नहीं रहे। दूसरा तरीक़ा उनका है, कि जो उनके करने का है। अब इसके बाद, दूसरा फ़ायदा होता है। हम लोग दिल पर ध्यान देते हैं। दिल पर ध्यान देने का मतलब ये है कि ये एक nucleus है और nucleus करते है पोषण। फ़ूल मे nucleus होता है, हर चीज़ में nucleus होता है और वो उसकी life होती है लिहाजा हमारी life सिर्फ़ heart है। हम heart पर meditation इसलिये करते हैं कि हमारे जो कुछ भी अच्छी बातें पैदा हो रही है, ये सब खून में खराब कर जाये, खून में प्रवेश कर जाये, ताकि जब वह खून का दौरा होता है तो उसी हालत में वो उसका असर सब ले लें और उसका नतीजा यह हो कि सर-झुक्री ही हमारी, हमारी system है, तब Divinisation होता चला जाता है। उसके बाद करते करते इसमें तीन-चार हल्की हल्की तब्दीली होती है। ईश्वर दर्शन की हालत, उसको मैने समझाया है कि हर ये पता चलता है - कि हर चीज़ में कंपन है और वो Divine vibrations जिसको हम कहते हैं, हर चीज़ में Divine मौजूद है।

.... और उसके बाद उससे और ऊँची हालत आती है। तो उस वक़्त में सिर्फ़ subconscious mind में इनसान मौजूद रहता है, मगर भास, इसी तरीक़े से हाल तब्दील, तब्दील होती चली जाती है। आखिरकार हम चक्र द्वारा चलते हुये, उनकी सब .... को अपनाते हुए, उसमे हम लयावस्था को प्राप्त करते हुए उस हालत तक पहुँच जाते हैं जहां कि Divinity Divinity भास रही है इसके सिवा और कुछ नहीं है। माया का भी अभाल है। उस region में हम पहुँच जाते है कि जहां माया हम पर कोई असर नहीं करती और Divine और Divinity जो कुछ भी असर है वही हम में जिस्म में .... कर सकता है और हम एक तरीक़े का Divinization करते चले चलते हैं। जब ये सबका crossing हमारा हो जाता है और उसके बाद हम जिस वक़्त pure

central region में पहुँचते हैं उस वक्त वही जो भी है हालतें Divine vibrations जो हर जगह मौजूद ही हैं, बस जितना आगे बड़्हते हैं उतनी ज्यों होते चले जाते हैं। उसके बाद Divine wisdom, Divine essence और ये सब चीज़ें और Vision of the Absolute ये सब चीजें पैदा होती हैं। जब उसको हम पार कर लेते हैं तब उस लयावस्था की हालत पैदा होती है जिसको ब्रह्मलीनता कहते हैं। उसको पार करने के बाद आगे कुछ और भी है, उसको अब बताना बेकार है।

****

Theory है कि इनसान जो है वो बंदर से बना है।
बंदर जिस वक्त इसका उरूज हुआ, ऊंचा बढा तो इनसान हो गया। मगर हमारे यहाँ इसकी theory खिलाफ़ है। हमारे यहाँ की theory ये है कि evolution से devolution हुआ। कमाल से हम ज़वाल की तरफ़ आये, और यहाँ ये चीज़ उलटी चलती है western thought मे। जिस वक्त कि, इनसान पैदा हुआ, उस वक्त मे वो complete था,मुकम्मिल था, full था, perfect था। और चुँकि अपने असल केन्द्र से निकला था, spiritual point से आया था लिहाजा full spirituality उसमे मौजूद थी। अब उस, जिस वक्त कि वह ज़हूर मे आया, जिस वक्त मे कि वह पैदा हुआ, तो उसमे wisdom भी थी, intellect भी थी, हर चीज थी। अब उसकी wisdom और intellect ने उसमे काम करना शुरु किया। जब काम कर, जब काम करना शुरु किया तो उसके result और उसके नतीजे भी पैदा होने लगे। कि जैसा आदमी करता है उसके नतीजे वैसे ही होते है। चुनांचे वो संस्कार अब बनना शुरू हो गया, अब degeneration थोड़ा सा आया। मगर चूंकि spiritual point से वो उतरे थे, उस spirituality को उन्होंने नही छोडा और उसी मे सोंचना शुरु कर दिया। तो सोंचना .. अब सोंचते सोंचते spiritual point तो था ही, उनको बहुत ज़्यादा research के बातें मिली बहुत ज़्यादा नई नई चीजे मिली, चुनांचे

उनको लिखना शुरु कर दिया या उसको आप ये कर दे कि स्रुति के form मे आये या किसी हालत में मतलब की उनपर उतरती चली गयी।

अब एक बात यहाँ पर out of place nahi hogi वह मै कह दूँ। कि सब से पहले Deccan plateau पानी से बरामद हुआ, volcano ke upheaval से। तो और उस वक्त और कोई चीजें बरामद नही हुई जिससे की यही जमीन जो थी यही land थी जो पहले बरामद हुई और इसके सबूत मे ये देते है कि हिमालया पहाड़ पर, मछली की खाखरे अब भी पायी गई है। तो अब आप ये देखें कि उस वक्त मे जो perfect आदमी आया था, तो उसमे शुद्दता मौजूद थी। हर wisdom शुद्द थी हर चीज शुद्द थी। तो उसकी शुद्दतायी फ़ैलने लगी क्योंकि radiation हमेशा रहता है, हर चीज मे radiation रहता है। उसकी शुद्दतायी फ़ैलने लगी। अब शुद्दतायी फ़ैलने लगी, तो वह जगह कौन सी थी, वह India का Deccan plateau था। अच्छा एक चीज ये attraction हर चीज मे मौजूद है, कुछ ना कुछ इनसान मे भी है, अब जमीन मे भी attraction मौजूद है और atmosphere भी attract करता रहता है। तो उसके वो जो विचार जो थे वो विचार सब उसमे खराब कर गये, सब उसमे दाखिल हो गये। तो मतलब ये कि उसमे भी शुद्दता पैदा हो गयी। अब उसमे इतनी ज्यादा..अब उसमे इतनी ज्यादा शुद्दता पैदा हो गई कि हज़ारों लाखों बरस तक एसा रहता, लिहाजा जब कोई इस किस्म की सोंचता है, तो India जगह मिलती है क्योकि वो चीज़ बुजुर्गों कि जो उन्होनें शुरू मे spiritual points, pure spiritual की जो कि हासिल कर के लाये थे, वो सब जमी है atmosphere मे घुस चुकी है। लिहाजा उसके असर से जब भी spirituality की, की जरूरत होती है तब India मे कोई शख्स आता है, और जगह नही होता और जगह ये चीज़े नही होती। ये out of the way हमने ज़िक्र किया।

अच्छा जिस वक्त कि हम आ गये, हर चीज़ हमारे .. वासना, जिसको हम कहते है, इन्द्रियाँ, ये सब काम करने लगे, उसका वैसा ही असर होने लगा।

असर होते होते, हमारी thinking dull होने लगी, क्योकि हर तरिके का खयाल था, हर तरीक़े का आदमी था, अब यहाँ पे difference between humanity and humanity पैदा होना शुरू हो गया। अब उसमे योगी भी पैदा हुये, और लोग भी पैदा हुये, मुखतलीफ़ चीज़े और मुखतलीफ़ खयालात बनते चले गये। अब आप जो चीज़ जब शुरू से start होती है। उसमे अगर बीच मे movement नही मिलता, या बीच मे push नही होता वो हमेशा खराब होना शुरू हो जाती है। अब उसमे जमाना गुजरता गया उसको बीच मे push कम मिला। तो उसमे क्या हुआ, उसमे grossness बड़ती चली गयी। और grossness हमारी इस कदर बड़ी कि अब मौजूदा level तक एसी आ गयी कि सिवाय grossness के और कुछ हमारे समझ मे नही आता।

एक ऐसी ही एक अच्छा सा किस्सा है। भई हम कहे देते है, कि नारदजी एक दफे वैकुन्ठ धाम मे गये तो वहाँ कोई आदमी ही नही। विष्णु भगवान ने कहा यहाँ तो कोई आदमी नही। ये क्या बात है। उन्होने कहा, यहाँ कोई आते ही नही। तो उन्होने कहा कि अच्छा नही आता है तो मै लाता हूं आदमी। तो तमाम बिचारे आदमी ढूंडने मे, कोई आदमी नही मिला। तो एक शख्स मिला .. में मिला। तो उन्होने कहा तुम बहिश्त मे चलोगे हम कहे हा साहब हम तैयार है मगर ये बतलाओ वहाँ वहाँ क्या क्या है, हम कहा वहाँ तरह तरह के खुशबू के फूल है और ये है और वो है और ये तमाम चीज़े वहाँ पर मौजूद है। उन्होने कहा, ये बताओ वहाँ भिष्टा खाने को मिलेगा तब तो हम जायेंगे। वो बिचारे चले आये बोले हा वाकई कोई नही मिलता। इसके सामने बहुत भिष्टोइ है।

तो मतलब ये मुखतलीफ़ चीज़े है मुखतलीफ़ बातें है वहाँ पैदा होने शुरु हो गयी मुखतलीफ़ किस्म की grossness पैदा होने लगी और उसी लिहाज से हम बनने लगे। अब gross जब होगी सहज मार्ग philosophy मे खास बात है grossness और कोई philosophy इतना complete method नही देती जितना

सहज मार्ग, सहज मार्ग system ने दिया है। कि सबसे पहले उस grossness को जो हम याने कब से बनाते चले आये है या उससे संस्कार बनाते चले आये है, सबसे पहले हमे उसे दूर करना चाहिये और यही हमारे यहाँ के जो preceptors है, सबसे tedious work और सबसे खराब work उनके लिये यही है। Transmission तो बड़ा आसान है, हम बोल रहे है transmission हो रहा है। ये क्या अवस्था है? इस grossness के द्वारा अब gross thinking हमारी पैदा हो गयी। अब लोग ये कहते है कि तुम्हारा method मान लो कोई कहे साहब वेद अनूकूल नही है, शास्त्र अनूकूल नही। कह सकते है। मगर कभी उन्होने यह भी सोचा कि उनका method है शास्त्र अनूकूल? क्या वेदांत मे मूर्ती पूजन का ज़िक्र है कहीं? अगर आप वेदांत follow करते है कहीं भी ज़िक्र आप नही पायेंगे। ये later development है जो अपने आप gross thinking से शुरु हो गया। वो कैसे शुरू हो गया?

अब आप देखिये, कृष्ण भगवान कि तस्वीर आप बनाये। ये कभी नही होगा कि आप उसे पैर के नीचे ले जाये। हालांकि वो कोई चीज नही, क्या उनकी respect की वजह से। अगर पैर पड़ जाये तो भी माथे से लगा लेंगे गलती हो गयी। तो अब चुंके हमने तस्वीर बनायी, तो एक हिसाब से हम उसको पूजना शुरु कर दिया दूसरा अब ये हलका form उसके बाद होते होते उनका statue बनने लगा, अब वो statue बनने लगा तो हाथ जोड़ने लगे सबकुछ करने लगे। अब उसकी ओर उनका temple मे जो form तो चीज़ तो अच्छी थी। तो gross thinking मे gross, gross चीज़ पैदा होना शुरु हो गई। अब जब gross पैदा हुई तो हर चीज़ gross है। अब इतनी आदत बन गयी कि उसके खिलाफ़ सुनना ही नही चाहते जैसे मैने किस्सा नारद का और उसका सुनाया था। सुनना ही नही चाहते उसके खिलाफ। तो सबसे बड़ी difficulty ये पड़ गयी कि सुन तो लो, वही आज Alberuni का thought फिर आ गया कि, कि हिन्दुओं का पतन शुरु हो गया की जो विचार उनके है उसके खिलाफ़ सुनना नही चाहते। जो वह कर रहे है, सही है या गलत है,

उसकी जगह दूसरी, दूसरी चिज़ पैदा करना चाहते, लिहाजा पतन शुरू हो गया वो quotation हमें बार बार याद आता है। अब gross thinking का यह result है मुखतलीफ़ पूजायें शुरू हो गयी। अब उसमे क्या है?

अब आप कोई चीज ले ले, कुछ मूर्ती पूजन ले, कोई gross work ले ले, उसका असर gross होता है। आप जैसा ख्याल करे, वैसे ही आप बनते चले जायेंगे। अब मूर्ती पूजन का तरीक़ा यही मूर्ति पूजन का ईलाज नही कि इस तरह दे लो कि मगर आप तरीक़ा पूछों इतना difficult है जिसको कहते है। फर्क ये विष्णु भगवान की आप पूजा करते है, आप temple मे जाये, आप उनकी पूजा किजिये, मगर ये, मगर किसकी किजिये? जिसको की विष्णु भगवान या मूर्ती जो है वो represent कर रही है। योग हो गया। वो चीज़ सामने नही है मगर ये बड़ा difficult चीज है। मुझे याद है, एक दफ़े डा. वरदाचारी के पास मे बैठा हुआ था, किसी और topic मे उन्होने कुछ कहा और यही बतलाया, तो मैने उनसे ये कहा कि साहब मूर्ति पूजन अगर करना चाहे तो यही एक तरीक़ा है। मगर ये बताईये, चालिस आदमी बैठे है, कौन इसके fit है कौन कर सकता है? उन्होने कहा कोई भी नही कर सकता। तो ये तरीक़ा अगर निकाला जाये तो इस तरीक़े से निकल, निकल सकता है। तो अब वो gross effect इतना कर्रा उन पर पड़ गया है कि वो उनसे अलहदा नही होना चाहते। ये आवरण इतना मोटा पड़ गया कि उससे अलहदा होना नही चाहते। सबसे बड़ी difficulty यह है। और वैसे तो grosser affect होगा, जगह block हो जायेगी। हमारे पास बहुत से ऐसे cases आये है और अब तो हम south north तमाम घूमते है कि बिलकुल जगह block मिली और बहुत से cases को हमे छोड़ देना पड़ा।

अब इसमे ये कि ईश्वर जो है Subtlest Being है। सबसे ज्यादा सुक्ष्म है लिहाजा हमें ये कोशिश करना चाहिये कि जितना ज्यादा से ज्यादा हम सुक्ष्म हो जाये, तो उसी मे हमारा कल्याण है और वही union है। अगर हम

इतने सुक्ष्म हो जाये कि जितना ईश्वर है तो बस यही union है,यही realization है, यही सब कुछ है। तो इसमे अपने यहाँ कि इसको हलका होने कि कोशिश करते है, भारी होने कि कोशिश नही करते। अब मान लीजिये इधर हम हलके होने कि कोशिश करते है और उधर भारी बनने कि कोशिश करते है तो इसके क्या माने double labour तो दिमाग पर होती है। दो, दो different channels आप बनाते है दिमाग में और अगर किसी transmitter के पास है तो उसको साफ़ करने मे बड़ा time लगता है और इनका time यूँ waste होता है जितना time उनका waste हो रहा है जितना सफाई पर हो रहा है।

सुष्टी जब पैदा हुई, grosser thinking भी शुरुआत हो गई और grosser method भी हम follow करने लगे। Idol worship के लिये जिसकी की मैं बुराई नही करता बल्कि उसकी हकिकत बयांन करता हूँ और जब हमारे पास finer means मौजूद है तो lower means की तरफ़ हम लोग baser means की तरफ हम क्यो, क्यो जाये और जो जल्दी के तरीक़े है उन्ही को हम क्यो न अपनाये। अब उसमे ये है कि अगर हम grosser चीज लेते है, मूर्ति लेते है या फोटो लेते है तो उसका effect जो है वो gross रहता है। हम बजाये subtle बनने के, सूक्ष्म बनने के, gross बनते चले जाते है। तो इसके माने ये है कि जितना कदम हमने आगे बड़्हना चाहा था उससे ज्यादा हम पीछें लौट गये। और वो जगह बिलकुल block हो जाती है और हमने ऐसे cases हमारे सामने बहुत से आये है। अब मान लिजिये कोई सहज मार्ग भी जो कि subtle तरीक़ा है और subtlest बनने का तरीक़ा है, उसके साथ मे ये कोई करता है तो वो तो effect, grosser effect उसमे होता चला जाता, और इससे हम सूक्ष्म effect लाना चाहते है, तो उसमे बड़्हा फरक पड़ जाता है और contradiction पैदा हो जाता है। जो teacher या preceptor है उसको double labour। एक तो सूक्ष्म होने को बड़ाना। दूसरे ये है, grosser effect को दूर करना; double labour और कोई फ़ायदा नही। और इसलिये by force

of habit वो भी बिचारे नही छोड़ सकते। और subtlest हो जाना जैसा कि मैने अभी कहा कि subtlest हो जाने जितना भी हो सकते है बस यही हमे जरूरत है इस बात की।

इसके बाद जाप के भी मैने cases देखे। जाप करने वालो की मैने इतनी जबरदस्त गुत्थी पायी है कि एक आध case अब भी है भक्त की मैने बड़ी मेहनत की है पर तभ भी कुछ पूर्व images सफेदी होती इतनी रही भी मै दूर नही कर सका इसलिये कि उनकी will मौजूद है। उसमे वजह क्या है कि जाप का तरीक़ा लोग नही बताते। बस तुम निकल निकल बताते है कि इसको पड़े जाओ, कोई मन्त्र, कोई चीज इसको बराबर पड़े जाओ, तो उसको repetition होते होते, repetition होते होते vibration घनिष्ट होना शुरू हो जाते है। बार बार याद से कहेंगे तो घनिष्ट होना शुरू हो जाते है। हवा अगर रोह से चलती तो भारी पड़ना शुरु हो जाती है। तो वो जो है वो एक ऐसी हवा इस तरीक़े से हो जाती है कि जितनी आप उसे पड़ते चले जाते हो grosser effect होती गयी है तो खुद gross बन जाता है। इसलिये तरीक़े से नही करते। एक सूत्र है, हमें संस्क्रुत .. ने बतलाया था जब कि हमने उससे कहा कि जाप क्यो करना चहिये? उसने हमे सूत्र दिया था कि मन्त्र का तरीक़ा ये के जो माने पर meditation करे। जो उसके मतलब है उस पर meditation करे तो क्या वो भी योग आ गया। मानलो उसको refine करते शुरू कर जाते है, उससे ज्यादा ..

कीर्तन के बारे मे, वो अच्छा हो कि अगर हम खामोश रहते है तो उससे कराह लेना ही अच्छा है। आवाज तो निकल जाती है। तो इस तरह से आप समझ ले कि जब हम बिमार होते है और हमें बुखार तेज होता है या कोई जिस्मानी तकलीफ होती है तो हम कराहना शुरू कर देते है। तो उस कराहने से कुछ relief हमे आराम मिलता है। कीर्तन आप कर के देखिये सिर्फ़

इतना relief आप को देता है, चाहे आप spiritual relief कहे चाहे mental relief सिर्फ़ इतना relief मिल जाता है जिससे कुछ कराहने से उसमे हो जाती है।

अब इसकी हक़ीक़त क्या है? चैतन्य महाप्रभु उड़िसा मे पैदा हुये और बहुत बड़े संत हुए। तो वहाँ पर नवाब की सल्तनत थी। हम लोग कोई पूजा नही कर सकते थे, न राम नाम कर सकते थे , कुछ नही कर सकते थे, बिल्कुल नुमानियत थी। तो उन्होने अपनी following बढाई और following बड़्हाने के बाद कीर्तन उन्होने start किया। तो जगह वो गया, गलियों मे, तमाम और किले के सामने और सब पीछे नवाब, उनकी गिरफ़्तारी होती तो मार, मार पड़ती, खूब पीटे जाते थे। मगर जहा पीटे गये वहाँ छोड़ दिये गये और वहाँ पर दूसरी जगह उन्होनें फिर गया फिर किया। तो इसलिये ये start किया कि ताकि स्थानी को तोड़े। अच्छा फिर भी जो start किया तो भई अच्छी तऱीके मे किया। एक उनके स्वामी नित्यानंद उनके चेले थे। तो वो behind the doors किया करते थे, आमतौर पर नही। वहाँ पर उनको सबको शुद्द कर लेते थे और शुद्द करने के बाद उनको कायदे में डाल के फिर हरे राम-हरे कृष्ण जो कुछ भी होता है किया करते थे। एक दफ़े ऐसा हुआ कि एक गैर आदमी को उन्होनें ले लिया।

अच्छा तो हा, उनको हाल आता था, एक बेहोशी आती थी उनको चैतन्य महाप्रभु और उनके disciples है वो भी बेहोश हो जाते थे मोहब्बत में। तो उस मर्तबा न हाल तो उनको आया,चैतन्य महाप्रभु को और न वह पर जो सुन रहे थे न उनकों कोई हाल मालूम हुआ, तो उन्होने कहा साहब यहाँ तो कोई गैर आदमी बैठा हुआ है, उन्होने कहा , हा साहब एक शख्स है, जो हमेशा व्रत रखता है, सिर्फ़ दूध पर गुजारा करता है, अन्न नही खाता, उन्होने कहा इसे निकाल दो। जब उसको निकाल दिया तो फिर तबियत लगना शुरू हुई। तो क्या बात थी। वो जिनको अब जैसे से शुद्द कर देते थे उनको कीर्तन मे बैठाते थे वरना एक नुकसान इसमे ये होता है कि हम जो कुछ बोल रहे आप भी वही बोल रहे है सब भी, तो सबकी आवाजे, कोई

अच्छी तबियत का है, कोई खराब तबियत का है, कोई अच्छा है कोई बुरा है, तो उनकी सब आवाजो का effect जो है आप कि heart के ऊपर आता है क्योकि आप उसमे attentive हो रहे है। तो मतलब ये उसके vibrations उसके खराब बिगड़ जाते है। इसिलिये उन्होने कहा कि इसको न बैठा लो। तो कीर्तन की तो ये दास्तान हुई, असल मे कीर्तन ये, मगर कोई करना चाहता है तो हमारा कोई हर्ज नही। इससे कोई नही, मगर असल मे कीर्तन ये, मगर जो हमारे finer means मौजूद है उससे अच्छे means मौजूद है तो हम उसको adopt क्यो न करे, मतलब हमारा ये है, कि वो तरीक़ें हमे अपनाने चहिये कि जो जल्दी हम पहुँचे और मेहनत कम से कम करना हो और ठीक तेजी से चले जाये और time जो है waste न हो।

अब इसके लिये स्वामी विवेकानंद ने एक दफा बहुत अच्छी बात कही है, उनका गुरू ऐसे है कि अगर जो बताते चले जाये और हम ठीक तरीक़े से करते चले जाये तो हमारी मोक्ष जरूर हो जायेगी। मगर, वो गुरू हमारे काम के नही। गुरू हमारे वो काम के है कि जो अपने spiritual force से हमको सेकते चले, transmission से मतलब था। सेकते चले, जो कहे वो उठा और वही हम से करवा भी ले और वही फायदा है। अब ये तो उनकी राय है। कि ऐसे गुरू कि तलाश करना चाहिये जिसमे ये चीज मौजूद है। और अब एक ऐसी प्रणाली बनी कि भई गुरू कर लो, ये idea है कि गुरू होना चहिये, नही भवसागर पार नही कर सकते है। हम कहते है, एक खूंटे से गुरू बंधे हुये है आपके, और एक खूंटे से आप बंधे, तो बतलायिये उनको अलहदा कौन करना न वहाँ जाके अलहदा कर सकते है, न वहाँ जाके अलहदा कर सकते है। इसीलीये तो हमने Reality At Dawn मे कहा था कि अगर एक शख्स है, तुम देखोंगे ये काबिल नही, तो उसको फौरन छोड़, ये नही लड़ के नही छोड़ना चाहिये, आसाइश से कह दे कि साहब हमारी पूर्ति आप से नही होती, हम दूसरा कर रहे है। अच्छा गुरू की यह duty है, कि जिस point तक उसकी approach है, उस point से अगर वो आगे जा रहा है और आगे guide नही कर

सकता तो उससे कह दे कि अब फलाना शख्स के पास जाओ, आगे आप को guide करेगा। अगर उसे नही मालूम तो ये disciple को इजाजत दे कि भई हमे ऐसा शख्स मालूम नही हम इजाजत देते है आगे तलाश कर लो ताकि इससे आगे ले जाये। ये होना चाहिये आपस मे।

****

पुज्य बाबूजी: .. Divine Superconsciousness develop कर देनी चाहिये । हर thought हर चीज की बड़ी ऊंची समझ हो ।
अभ्यासी: ये तो हुई बाबूजी । पर ये कैसे develop होगी?
पुज्य बाबूजी: develop सिर्फ़ meditation और वही गुरू की क्रुपा होनी चाहिये ।
अभ्यासी: तो गुरू की क्रुपा ही हो, जभी सब develop हो सकता है?
पुज्य बाबूजी: अब क्या उसको, अपने आप को इतना खाली कर दे कि सब भरते ही चले जाये। तो यही क्रुपा है।
अभ्यासी: जब ध्यान में बैठते, बाबूजी तो जो hollowness होती है वो खाली होने की होती है?
पुज्य बाबूजी:Blankness. उसे कहते है। Blankness. ये एक एक thought जो है,वो centre बना लेता है। यहा से हमने सोंचा यहा सोंचा, उसका centre बन गया । अब उसकी waves जो है, दौड़ने लगी । अब उसके ऊपर आप जो चीज़ emphasize करते चले जायेंगे.. चले जायेंगे वही .. हुई thought पर। ..

अभ्यासी: बाबूजी महाराज ये जो ग्रहण, ग्रहण के बारे मे आपका क्या ख्याल? आज कहते है ग्रहण है।
पुज्य बाबूजी: ये तो superstitions है लोग लगा देते है। वैसे तो हमें मालूम है geography बताती है कि जब प्रुथ्वी बीच में आ जाती है, I mean Sun और

moon के बींच में आ जाती है तो उसका साया जो है ... खास अहमियत नही है।

अभ्यासी: हम तो नही मानते ।

पुज्य बाबूजी: Gross, Grossness होती है एक तरीके की। या पीछे मैल होता है जिसे हम कहे से समझे ले कि आप में मैल है उसका सूरज का।

अभ्यासी: सूरज का मैल! बाबूजी की एक एक बात जो है वो खूब सोंचने वाली। सुभह कह रहे थे, उस समय दोपहर में कहा नही कि होली society का एक जोक है । समाज का एक जोक है होली । एसी ये गंद है धर्म का इसके ऊपर विश्वास करना ।

अभ्यासी: बाबूजी महाराज ये लालाजी की आप को, अभी भी लालाजी महाराज आप के पास आते है कभी कभी?

पुज्य बाबूजी: कभी क्या? किसी को हर साथ, न हम उनका छोड़ते है न वो हमारा छोड़ते है।

अभ्यासी: आपके पास ही रहते है लालाजी। आप लालाजी की बात ही मानते है?

पुज्य बाबूजी: अब ये सुनिये, आपकी बात अच्छी हुई वो भी हम मान जायेंगे।

अभ्यासी: ..... ये तो कितनी अच्छी बात है ।

और बाबूजी कुछ हमें अच्छी सी बात बताईये कि ध्यान मे जल्दी से हमको आगे तरक्की हो, ऐसी बात बताईये कि हम जल्दी कैसे आगे बड़े।

पुज्य बाबूजी: constant remembrance, इसकी practice करें ।

अभ्यासी: constant remembrance में? चैबीस घंटे?

पुज्य बाबूजी: चैबीस घंटे । उसमे देखिये कि एसा होता है कि आप office का work करने बैठे, उस वक्त थोड़ा सा rest your thought on God at that time. और फिर go on doing your own work, काम, काम अपना करते चले जाये।

तो वो, वो चीज जो है वो जिस वक्त कि आप भूलेंगे, उस वक्त फिर याद आ जायेगी, अपने आप, automatic.

अभ्यासी: ये तो होता है ।

पुज्य बाबूजी: तो बस यही है। ये सरल तरीका है इसका । यानी आप,आप, आप दुनिया का काम तमाम, पानी भरना, और ये जो है बर्तन मांझना ये चाकरी, वो एक thought ले लिया उससे पहले थोड़ा, वो कायम रहेगा, जो आप भूलेंगे तो फिर याद आ जायेंगी कि अरे हम ...

अभ्यासी: यही होता है बाबूजी । ऐसा पागलपन सा भी हो जाता है कई दफ़ा। सोते सोते भी।

पुज्य बाबूजी: इसमें पागलपन थोड़ी है।

अभ्यासी: बस हर समय ध्यान जैसे इधर ही खिंचा रहता है ।

पुज्य बाबूजी: automatic हो जाता है।

अभ्यासी: automatic!

अभ्यासी: एक बात बाबूजी, हमे एसा लगता है जैसे की, जैसे हमारे उठने का time अगर ४:३० बजे का है तो हमारे को घंटियाँ बजा कर उठा दिया जाता है। ये क्या बात है? ऐसी जोर जोर से घंटी बजती है, कि टनन, टनन और हमको उठा उठा कर बैठा दिया जाता है।

पुज्य बाबूजी: अंदर मालूम होता है?

अभ्यासी: अंदर मालूम होता है।

पुज्य बाबूजी: ये सब बातें अनाहद है। दस आवाजे होती है। ये अलहदा होती है । अनाहद कि दस आवाजे होती है । तो किसी वक्त जब कोई thought का असर उस पर ring करने लगता है दर्ज हो जाता है तो different आवाजे पैदा होती है । ring.. लालाजी साहब ने कहा थे, कि "दस आवाज के लिये दस दस बरसे बीस बीस बरसे लोगो को सुननी नही .. । पर जरा सी तर्कीब मै आपको बता दूँ अभी आप सुनना ..", मगर वो पूँछा नही हमने वो साहब वो कौन सी तर्कीब थी, उससे हमारा मतलब ही नही था।

अभ्यासी: हा ये भी बात है। पर आप को तो खुद ही तर्कीब पता थी । आपने लालाजी से क्या पूँछनी थी।

पुज्य बाबूजी: Evil ..

अभ्यासी: Evil और Good

पुज्य बाबूजी: ये, ये war सुर संग्राम का है । the war. सुर संग्राम । असुर, सुर और असुर की लड़ाई। असुर तो ये हमारी जो व्रुत्तियाँ है जो खराब है - वो तो असुर है , और जो अच्छी व्रुत्ति वो सुर है। तो ये fight है एक दूसरे में जो कामयाब हो जाये।

अभ्यासी:: इसी fight को जो आदमी उसमें बुरे प्रव्रुत्ति को दबा दे, जीत हो जाती है उसकी ।

पुज्य बाबूजी: See see .. जो higher thought अगर दिल में बैठ गया तो वो अपनी तरफ खीचेंगा क्योकि जो चीज आती है उसमें attraction पैदा हो जाती है - क्यो? आपमे power मौजूद है। आप खुद उसमें attraction पैदा कर लेते है। इस वजह से फायदा होता है।

अभ्यासी:: बाबूजी महाराज आपको सबका कितना ध्यान रहता है। आज आपने हमको गाड़ी भेजी सुबह । हम वहा पर हम express नही कर सकते कि हमको कैसे feeling हुई। इतना ध्यान ... असम्भव को भी सम्भव वाली बात है ...।

...

...

अभ्यासी:: समझ मे नही आया तो घंटी बजाते रहो।

पुज्य बाबूजी:.. बाकी कोई आडंबर नही है। वो attraction क्यो हो? क्यो attraction हो?

अभ्यासी:: उसमे, उसमे आडंबर बहुत है ना बाबूजी, मूर्ति पूजा मे attractions बहुत है। और ये जो है ये तो जितनी subtle चीज है उतनी ..

पुज्य बाबूजी: योग सब पड़े, योग दर्शन नही पड़ते। योग दर्शन नही पड़ते, अरे भाई उसको पड़ भी ले जैसे और किताबे भी पड़ी है, वो भी सही। योग दर्शन स्वामीजी का, स्वामी विवाकानंद का लिखा हुआ..। हमने बताया भी संघी लोगो को। यहा भी कही मिलेगी।

अभ्यासी:: हम लोगों ने भी, आपने last time बताया था तो लाईब्रेरी में जा कर खरीदी। योग दर्शन - पतांजली योग।

पुज्य बाबूजी: उसमे बहुत कुछ meditation के बारे मे लिखा है। उसमे miracles भी लिखे है।

अभ्यासी: तो बाबुजी आप heart पर ध्यान देने का ज्यादा..

पुज्य बाबूजी:अभी तो यही .. process just easy है। .. heart पर meditate करना चाहिये Rest your, Rest yourself on the thought

अभ्यासी:: Rest yourself on the God?

पुज्य बाबूजी:No. Just rest inside on the light or ....

अभ्यासी:: हा। इश्वरीय प्रकाश मेरे ह्रुदय में है ।

पुज्य बाबूजी: Its a mere supposition.

अभ्यासी:: mere supposition. बाबूजी blank हो जाने के बाद जैसे supposition किया ध्यान करते है हम लोग। तो हमने अपना ध्यान ह्रुदय पर कर लिया की इश्वरीय प्रकाश मेरे ह्रुदय में है। उसके बाद ध्यान को बिल्कुल छोड़ देना चाहिये?

[और ये जो है ये तो जितनी subtle चीज है उतनी ..

अभ्यासी: तो बाबुजी आप heart पर ध्यान देने का ज्यादा..

पुज्य बाबूजी:अभी तो यही .. process just easy है। .. heart पर meditate करना चाहिये Rest your, Rest yourself on the ..

अभ्यासी:: Rest yourself on the God?

पुज्य बाबूजी:No. Just rest inside on the light or ....

अभ्यासी:: हा। इश्वरीय प्रकाश मेरे ह्रुदय में है ।

पुज्य बाबूजी: Its a mere supposition.

अभ्यासी:: mere supposition. बाबूजी blank हो जाने के बाद जैसे supposition किया ध्यान करते है हम लोग। तो हमने अपना ध्यान ह्रुदय पर कर लिया की इश्वरीय प्रकाश मेरे ह्रुदय में है। उसके बाद ध्यान को बिल्कुल छोड़ देना चाहिये?]

पुज्य बाबूजी: नही। उसे आप ध्यान एक दफे कर लिया, अगर आप को मालूम हुआ कि आप विचारों के साथ में बह गये, you come back again फिर आप आ जायेंगे.. पर उनसे fight मत करना । आप जिस वक्त thought ये देंगे....

Some speaker : ये पूजा कर रही थी तो आप को disturb हो गया।

पुज्य बाबूजी: हा disturb तो हो गया। मगर इनमे इतनी power तो है नही कि power तुमसे बुलाई खिंचाई।

...

बिमारी की हालत में, बिमारी की हालत में तो energy जो है preserve करनी चाहिये .... आप ऐसा ध्यान लगाये कि आप को फायदा हो।..... बिमारी के हालत में, बिमारी के हालत में तो अगर आप किसी का ध्यान करे, किसी से कुछ अच्छी बात करें तो उस पर भी तो असर होगा।

अभ्यासी: बाबूजी के ध्यान में ही तो बैठते है।... नही, ये बात नही, आप नही समझे..

पुज्य बाबूजी: नही, उस समय जैसे हम बिमार है energy कम है ... energy कम है....energy कम है। तो आपने thought किया की हम फौरन बिमार हो जायेंगे। आपको फायदा हो जायेगा मगर हम में weakness थोड़ी आयेगी.. क्योकि energy जो है वो spend कर दी।

अभ्यासी: तो यही जो चीज है, क्योकि हमारा link है। हम यही से energy draw करते है। यहा से ही शक्ति हममे आती है । यहा से हि waves आती है। तो जब बाबूजी की तबियत ठीक नही है और आप लेटे है उस समय

अगर हम meditate करते है तो वाकई बाबूजी को नुकसान है। ये तो बात ही है।...

पुज्य बाबूजी: आमने सामने। घर पर आप है तब नही।

अभ्यासी: आमने सामने की बात है। सामने तो बैठी थी मै।

पुज्य बाबूजी: ये फ़र्ज़ करे कि घर में बैठी हो, तब नही होता ।

अभ्यासी: देखिये कितना प्रत्यक्ष, कहते है कि how transmission होता कैसे है, ये प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हम सामने बैठे है और बाबूजी लेटे है, और बाबूजी, आँख बंद है और बाबुजी को पता है कि हम prayer में बैठ गये। प्रत्यक्ष। कितनी सुंदर बात है।

ये जैसे इन्होनें स्वयं मे अभ्यास शुरू कर लिया। तो स्वयं में अभ्यास में गुरू तो है नही। बिना गुरू के कैसे प्रगती होगी?

पुज्य बाबूजी: self होंगे तो आप कुछ level तक आप ध्यान दोगे। अगर किसी कि help नही है तो आपमे power कुछ level तक होगी। फिर जाते जाते एक चीज ऐसी आ जाती है कि आप higher power के in contact हो जाते हो। अच्छा जब उसके in-contact होंगे, हम higher power के तो उसमें.. अच्छा तो वहा पर वो power जो है उसमे हम cross नही कर पाते, क्योकि हम में इतनी power नही है। फ़र्ज़ करो इस centre पर आप है। इस centre से उंचे centre पर आप नही आ सकते। तो उस वक्त में गुरू की जरूरत ये है कि उठा के आप को यहा रख दे, और आप in contact है तो क्या होगा तो वहा पर एक sheet बनती ok... या के एक जमीन सी उंची सी पैदा हो जायेगी कि आप लौट न सको। .. तो उसमें ज्यादा power जिसमें है वो उठा कर आपको फौरन रख दे, एक मिनिट में.. time waste नही होगा आपका।

अभ्यासी: तो मतलब सारी उमर भी अगर कोई करता रहे तो बिना गुरू के वो points cross नही कर सकता।

पुज्य बाबूजी: बाकि वहा पर force तो बहुत ज्यादा है ना। उस force पर हम आपको ले जा रहे है। कि जब तक हम में इतनी power नही कि वहा से वहा तक हठा दे, तब तो आपके....आपको किसी जगह पर ...।

अभ्यासी: यही मै इनकों बता रही थी। मै इनको कह रही थी कि बिना गुरू के पूरा आदर्ष की प्राप्ती नही हो सकती। यही मै इनको समझा रही थी।
पुज्य बाबूजी: Higher चीज के लिये हम बता रहे है। कुछ कुछ, कुछ एक stage तक आप खुद जायेंगे। जहा तक का आप का काबू है उसके ऊपर। ..power आगे..
अभ्यासी: तो बाबूजी हम लोगों की बुद्धि हि कितनी सि है। जो कुछ दूर तक पहुँचेंगे हम तो सोंचेंगे हमने सब कुछ प्राप्त कर लिया।
पुज्य बाबूजी: हा ये बेवकूफी होती है।
अभ्यासी: ये बेवकूफी होती है।

पुज्य बाबूजी: हमने इसमे लिखा है कि कि दरिया मार्फ़त, मार्फ़त कहते है spirituality.. मार्फ़त... मतलब के एक सूफ़ी ने लिखा है कि सैकड़ो दरिया रट के रट आदमी पी जाये, दरिया spirituality के, spirituality के सैक़ड़ो दरिया रट के रट पी जाये, फिर भी एमन मजीद का नारा लगाये । एमन मजीद के माने ये है कि अभी और लाओ (और लाओ) अभी लाओ । अच्छा ये कैसे लब्ज़ .. mohamedan cult में ये है कि जिस वक्त के ये होगी, प्रलय होगी, क़यामत। जिस वक्त के क़यामत होगी, उस वक्त में, उसको क्या कहते है...हा तो वहा पर दोजख लोग डाले जायेंगे। हा, दोजख लोग डाले जायेंगे। दोजख से पूछा जायेगा बोलो और चाहिये तो कहेंगे कि और लाओ, एमन मजीद, एमन मजीद। तो ये ....कि पीते चले जाओ, ..एमन मजीद अभी और .. हमारा पेट नही भरा।......

लालाजी के सामने एक case आया था। एक मजनु था बहुत जबर्दस्त। और मजनु हर हालत मे .. मगर हमारे हिंदु system मे ये मजनुयियत नही.....
वोह मजनु था वो मसलमान थे। तो अब उनके connections तो लालाजी के थे। तो उन्होने कहा शराब के ऊपर। "हाय कमबख्त तूने पी ही नही है"। तो एसे कहते .. कप्ड़े फाड़के चल दिये। मजनु हो गये। हाय कमबख्त तूने पी

ही नही है वो मार्फ़त की यही क्या कहते है, Realization की शराब,शराब तूने पी के नही देखा। क्या मजा आता है..

.....

हा, तो हमने कहा हम भिड़ जायेंगे... हम आजमायेंगे हम में ज्यादा power है कि उसमे ज्यादा power है। अच्छा, भरोसा तो हमें लालाजी पर पहले से था। किसी कि परवाह नही करते थे। इसका सवाल हि नही उठता था। घूमन लगाये जहा जहा बैठते, हमे कोई मिला ही नही। हमने कहा आजमा के देखले इनको। यही ..... एसा नही करते... इसकों बद्दुए से निकाला जाये। एक मजनु होते है, एक सलिक होते है। सिल्क कहते है लड़ी को, उससे निकला साली। एक लड़ी से बांध दी, इस circle में आप आ गये। तो सुलूक, सुलूक कहते है, सिल्क कहते है.... तो उससे मजनुयियत पर यह होता है कि जिस point पर कोई मजनु हुआ, उसी point पर तमाम उम्र रह जायेंगे। तो बस शराब उसकी यह थी।

****

पुज्य बाबुजी: अब थोड़ी सी कमी है तुम्हारे में। मगर अब पूरी तुम कैसे करो पर तुम खुद ही उस्ताद हो। तुम जब महीन आवाज करते हो, महीन आवाज, महीन तो जानते हो न.. "

अभ्यासी: जी बाबुजी

पुज्य बाबुजी: I mean क्या था महीन?

अभ्यासी: soft ..

पुज्य बाबुजी: हा soft soft. अच्छा जब वो आप करते है, तो उस वक्त मे क्या होता है की, की ब्रह्मांडी सुर से आप मिल नही पाते, उससे कुछ नीचे रहते है।

अभ्यासी::.. जी बाबुजी .. soft note

पुज्य बाबुजी: हा soft note । हम गा थोड़े रहे है हमे याद ही नही आ राहा।

अभ्यासी:अब तो आप बतायेंगे सिर्फ़ ये कहने से क्या फायदा।

पुज्य बाबुजी: अच्छा दूसरे ये है, की वो, यानि वो उसके तुम्हारे कायदे से तो बिलकुल ठीक है, अपने कायदे से हम बता रहे है। कि जिस centre से जो चीज होना चाहिये वो नही होती। हम इसको सिखाये कैसे? तुम कभी, कभी centre मे तो घुसते नही । fire centre मसलन ले लो, तो fire centre के आप ऊपर रहते है। अगर उससे कही touch हो जाये सब तरफ गर्मी, गर्मी पैदा हो जायेगी। तो ये नही कि भई जलने लगोगे। तो अब पता नही सुरो का क्या हाल है? नही, है तो सही वैसे उनके कायदे से सही है, पर हमारे कायदे से mistake है। मगर उसको बताये कैसे ये difficulty create हो गयी। क्योकि हमे ये भी चीज उन्होने transfer की है transmit की है तो इसिलिये हमे पता है।

एक साहब ने लालाजी से ये सवाल किया। एक गाने वाले थे बजाने वाले भी, पेशावर नही थे मतलब ये कि अपने घर पर जैसे, वो आये तो उनसे कहा,उनसे कहा कि भाई हम गाना सुनना चाहते है। इसमे ..उन्होने कहा अच्छा भई सुनो। तब उन्होने ये कहा कि साहब आप के आवाज मे असर है। तो उन्होने कहा साहब हम पिन्डी सुर को, ये पिन्डी सुर को ब्रह्मांडी सुर से मिला दिया। इसलिये उस मे effect हो जाता है । अच्छा और हम एक बात को हमे पता चला। हर centre से, वो कुछ sound का connection रखते है। तो अच्छा वो हमे पाठ मिल गया। हमने इसके बेहन को किया impart । पता नही उसे। भई transmit हुआ समझा उसे पता नही। मगर जहा पर जरूरत होती है वो वही उसी centre से लग जाता।

अभ्यासी: तो काम आपको बनाना पड़ेगा बाबूजी।..आपको बनाना पड़ेगा काम।

....

पुज्य बाबुजी: .. गा नही पायेंगे।

दीनन दुःख हरन नाथ, दीनन दुःख हरन नाथ, संतन हितकारी..

अब आवाज चलती नही हमारी। ..ठीक उसमे नही आते, कायदे में नही आते।

दीनन दु:ख हरन नाथ, दीनन दु:ख हरन नाथ, संतन हितकारी
दीनन दु:ख हरन नाथ, दीनन दु:ख हरन नाथ, संतन हितकारी
दीनन दु:ख हरन नाथ, संतन हितकारी

अजामील गीध ब्याध, अजामील गीध ब्याध, इनमे कहो कौन साध
अजामील गीध ब्याध, इनमे कहो कौन साध

पक्षी हू पद पड़्हात, .. पक्षी हू पद पड़्हात, गणिका सी तारी
पक्षी ही पद पड़्हात, .. पक्षी हू पद पड़्हात, गणिका सी तारी
दीनन दु:ख हरन नाथ, दीनन दु:ख हरन नाथ, संतन हितकारी..दीनन दु:ख हरन नाथ।

तंदुल देत रीझ जात, तंदुल देत रीझ जात, साग-पात सो अघात
तंदुल देत रीझ जात, तंदुल देत रीझ जात, साग-पात सो अघात

गिनत नाहिं जूठे फल, गिनत नाहिं जूठे फल, ..गिनत नाहिं जूठे फल खट्ठे-मीठे खारी
दीनन दु:ख हरन नाथ,दीनन दु:ख हरन नाथ,संतन हितकारी..

बस अब ठीक वैसे ही सुना दिये तो तीन ...
बात ये अब आवाज मे वो बात तो रही नही।
अभ्यासी: ... कुछ बाकी है थोड़ा सा?

पुज्य बाबुजी: पड़ते जाए, दोनो काम साथ नही होते।
...

धुर्व के सिर क्षत्र देत, प्रह्लाद को उभार लेत
धुर्व के सिर क्षत्र देत।

....

सब कहे राम राम, हम भजे सैया सैया सब भजे राम नाम, हम भजे सैया सैया ... अब चलता नही.. अब चलता नही गला। सब कहे राम राम, हम भजे सैया सैया .. सब के है राम राम, हमरे, हमरे गुसैया सैया।

'सै' means sweet heart. All people, recite the name of Rama, i.e, Lord, but I recite the name of the sweet heart. So all, So the God is for all, for all of them. Only God. And for him the sweet heart is only God. Beloved is the only God.

...

गुरूजी कहते थे मै ताल और सुर नही जानता मगर जो जानने वाले वो कहते साहब कभी ताल और सुर से अलहद ही नही होते थे। कायदे का गाना। और उसमे एक ये था कि एक बच्चा गा रहा हो, वो जैसी उसकी महीन आवाज वैसी copy कर देंगे। अब बुड्ढा गा रहा हो वैसी आवाज मे गा देंगे। ये एक अजीब है।

वो साहब इतना अच्छा लिखा है। दिल्ली के थे वो। तो उनके नाम से रोड भी है ... मोहोब्बत मे अव्वल दर्जे के गुरूजी। उसमे किस्सा ये था कि बहुत बड़ा businessmen थे ये, नाम भूले जाते है। उनके दिवान भी है। उस दिवान को हमारे पास था मगर मिला नही। हम वो दिवान चाहते भी दिल्ली मे गये तो सही.... जो है, वो तार तार हो रहा है एक एक जोरा बिखर गया, मोहोब्बत का। लिहाजा जनेऊ पहने घूमे फिर रहे..

अज़ सर-ए बालीन-ए मन बर खेज़ अय नादान तबीब
दर्द मन्द-ए इश्क दा दारू बजुज़ दीदार नीस्त;

एक बिमार आदमी है। हम बिमार है। तो हकीम ने आया और उसने इलाज किया तो उससे उन्होने कहा कि आप हमारे सिराहने से उठ जाये, क्योकि जो हमारी दवा है, वो तुम्हारे पास नही। कि जो मोहब्बत का, मोहब्बत का बिमार है, तो उसको सिवाय इसके कि उसके इश्वर के दर्शन हो जाये और कोई उसका इलाज नही। बड़ा अच्छा ..... है। .. नाम उसका भूले जाते है। अच्छा हिन्दी शायरी भी वही करते है। हिन्दी शायरी भी बहुत बड़िहया... उनका किस्सा ये था की कही बाहर गये और वहा से सामान वगैरह कुछ लाये, बेचने के लिये। तो उनके गुरू ने ये कहा था कि हमारे मरने के ४० रोज के बाद इसको खबर करना। अच्छा वो चालिसवा रोज था, तो अपने दोस्त के पास ठहरे। तो हाल पूँछा उनका, हा खाना-वाना खा लिये फिर चले गये। तो दस ग्यारह बजे के करीब रात को उन्होने पूँछा, उन्हे ख्याल पैदा हुआ कि वो है नही। तो साहब वैसेही भाग खड़े हुए। और उन्हे ये भी पता नही कि उनका कब्र कहा है। और कुछ पता ही नही। और वही पहुँचे जहा कब्र है। तो वहा पर उन्होने जैसे कब्र जो बनती है जरा ऊँची बनती है। तो उन्होने ये कह दिया था की, की बराबर जमीन पर बनवाना, ताकी पता नही चले। उसको पता नही था, मालूम था कि उनकी death हो जायेगी। उसपर काटें-वाटे डाल दिये। और वो समझ गये कि ये ही है और वहा पर वहा पर कहा कि लिखा, लेखनी है कि काटे जो है सब जल गये और वो कब्र निकले आयी और वहा पर उन्होने ये कहा था .. हिन्दी का शायर है

बोरीस, बोरीस हुवै सेज पर, मुख पर डारे केस
बोरीस हुवै सेज पर, मुख पर डारे केस
अपना नाम जाने क्या लिखा.. खुसरो, खुसरो
खुसरो चल घर आपने, चौदिस भव अन्देस

और बस यु कहके ../मर गये/ वही पर उनकी भी कब्र बनी। उनके लिये मुसलमान कहते है उनसे ज्यादा कोई मोहब्बत करने वाला नही..

****

.. That was a message read by Revered Master SriRamchandraji Maharaj of Shahjahanpur at Madras on the occasion of PujyA Lalaji Sahab's centenary celebration on the 24th of february 1973

हा उनके Master आप नही हो सकते। ये नही हो सकता आप उनके Master हो जाये। temporary बहुत से बाते है, ये सब बाते तो नही कर सकता इनसान, पर temporarily सब suspend जरूर कर सकता है। ये .. उन्होने लिखा है, स्वामी विकानंद ने भी लिखा है, कि temporarily suspend कर सकता है, ये नही कि whole ही कर दे । हम तो एक दफे, जब हमने कहा कि heat is diminishing.. एसी कुछ लिखा था। उसके बात तो पेपर मे भी आया था। तो हमने कहा कि ये रामचंद्र इंग्रेजी अच्छी लिखते है तो हमने कहा कि अच्छा, एक article do, की science volume में कि इतने साल और रहेगी इतने साल कम हो जायेंगे, एक article do पेपर में। date and time, इस date और इस time के बाद,ये तौले, क्या आपको वही original state आवेगी या नही आवेगी। एक line लिखा भी ली। एक line लिखा, उन्होनें कहा, नही। हम नुमाये, उन्होने कहा हर्गिज नही ..और उसको ठीक करने का ईरादा था। अब आप देखिये इतने इतने बड़े काम आप समझ जाते हम कर लेंगे, बोले नही। अब नही कह दी तो फिर हा कैसे कह सकते है। हम खामोश हो गये। उसके बाद हमने फिर reason पूँछा कि इसका reason क्या है। बोले heat diminish इसलिये हो रही है कि destruction होना है। अगर तुम इसकी heat ज्यो कि त्यो कर दोंगे, .. हा हा तो फिर ये destruction ..। तो फिर ये nature के खिलाफ हुआ ना। तो ये भी तो मुसीबते है ना। यानी इस Nature से कोई ..,.. कुछ नही करते।

अभ्यासी: Command.. उसका क्या मतलब होता है जी जब Command आप कहते है Nature के powers के ऊपर, लेकिन आप को उसी के साथ साथ चलना पड़ता है, तो ये कैसा command है?)

पुज्य बाबुजी: साथ भी चलना होता है, command ये होता है यानी orders लेना पड़ते है। उसके मर्जी के खिलाफ आप नही जा सकते। और आप जायेंगे तो temporarily आप चले जाये। हा अगर अल्लाह मियां से कोई भिड़ जाये, हमसाथी कोई मिल जाये तो उन्हे भी मुश्किल पड़ जाये, एक दफे मुश्किल पड़ जाये तो हमारा चाहे सो हाल हो। मगर बात ये Master जो बीच मे है, उसको disobey कैसे कर सकते है। Master जो बीच, वो नही कुछ कहेंगे पर वो, वो ये direction कहे - नही। Master जो बीच में है।

अभ्यासी:तो मजबूरी Masters कि वजह से है, Not because of Nature.

पुज्य बाबुजी: अरे हम अपने कहा तक किस्से सुनाये। .. बात पे बात आ गयी। बात ये है china को हम enemy जरूर समझते है अपना as a humanity तो नही..। तो इन्होनें तर्किस्तान क्या eastern तर्किस्तान एसी कुछ अपना वो बम का कारखाना बनाया। हा, कारखाना बनाया। तो हम कहा हम will आजमाइश की। इसको हम break कर दे वहा पर। अच्छा अब फिर उसमे अब कुछ सोंचा। इसको break करे तो India कैसे.. । तो अब उसको सोंचने लगे अब सोंचते सोंचते ख्याल में आ गया कि ये तर्कीब है। और हमने अपने आप को gather करना शुरू किया उस पर। हम कहा trial हि सही कि देखें burst कर सकते है कि नही। उन्होने कहा ये क्या कह रहे आप। हम कहा burst कर रहे है उनका कुल, कुल machinery burst कर रहे है, देख रहे है। नही, खबरदार, जो ऐसा किया। नही करने दिया। अब हम ये नही कह सकते, कि होता है नही, मगर अपने आप तो आजमाना चाहते थे।

बहुत से हमारे साथ मे ऐसी बाते लगी हुई है, हमने china के खिलाफ सोंचा कि उसकी, क्या नाम, river जो है ब्रह्मपुत्रा इसी मे इस कदर खराब किया है उधर ही india को उसको क्या नाम, उसका धार जो है, china की तरफ कर दे। और हम आसाम जा रहे थे। सोंचने लगे कि कौन सी ऐसी जगह हो सकती है जहा से, जहा आसानी पड़े। तब उसके बाद हमें मिल गयी एक जगह पर याने यहा पर weak जगह है, यहा पर से हो जायेगा। अब करके हमने gather करके उसको हमने करना शुरू कर दिया। तो लालाजी कहते सुनिये साहब, कर तो तुम ले जाओगे, पर 30 years लगेंगे। 30 years.. break करने में। हमने साहब से कहा था एक दफे, अब शायद पेपर मे आ गया या नही। इसको 25 years होंगे, कि हमे अंदेशा है कि गंगा जो है dry up न हो जाये। आधा fascination निकल गया अगर गंगा dry up, dry up हो गयी तो। उसके बीच मे पत्थर आ गया। बीच मे पत्थर आ गया यानी, फर्ज करो यहा से यहा तक फासला है, तो करीब करीब, आधे या आधे से कुछ कम, वो, वो rock यहा पर आ गयी बस पानी, थोड़ा पानी ..। अगर वो rock नीचे आ गयी तो गंगा खत्म हो जायेगी।

अब उसे तोड़े कैसे कोई तर्कीब, ये बड़ा मुश्किल कहा पर से खोदे और न मालू क्या हो तो, कोई मजाक थोड़ी है। तो अब इसके सिवाय will के, और कोई चीज हो ही नही सकती,.. से तोड़िये आप। तो will से तोड़िये। ये Nature का plan नही है। ये automatic ऐसी चीज होगी। अब ये कौन करे हमारे को..ये काम थोड़े महीने, पंद्रह दिन का, साल देढ साल का काम था ये। उसको break break करना शुरू कर दे। नही तो गंगा dry हो जायेगी अगर कही full आ गया तो। (अभ्यासी: my God) और हमने 25 years पहले जो सोंचा था उससे अब ज्यादा नीचे खसक गया। उससे ज्यादा खसक गया। अच्छा ये हम कह सकते कि volume of water कम हो गयी.. यानी जैसे वहा से आता था main source से volume of water... कम हो गयी। ये पेपर मे अब आ चुका है। ये आया है की कोई पत्थर बीच में आ गया है गंगा के, बस इतना आया है बस। उस volume of water से उन्होने निकाला हुआ है

ये। ये चीजें सब लिखी है मेरे को तो minor चीजे थी। बहुत सी चीजे हमने कहा moon मे पानी है। जब उनसे कहा दे पेपर में, कहा पेपर मे देने की जरूरत नही है। moon मे पानी है। landing था गलत। landing उन्हे दूसरी यानी उनको यहा के directions के हिसाब से earth के east की तरफ, उन्हे land करना चाहिये था, और वो west की तरफ यहा के हिसाब से west की तरफ land किया जहा गये समझो। east की तरफ जाना चाहिये था। तो हम तो बेहुदा बाते हमारी जाने कितनी दिमाग मे आते रहती है।
ये हवा हुई ना जिससे जाते है rocket, तो वैकुंठ में भी तो ले जाये। तब पता चले कि वैकुंठ है भी या नही। अच्छा लालाजी ने अपने...

अभ्यासी: रावण तो सीड़ी बनवाया..रावण तो सीड़ी बनवाया.. वैकुंठ के लिये? लेकिन वो अधूरी रह गयी।

पुज्य बाबुजी: नही रावण मे power बहुत थी। अब देखिये, रावण की पहूंच ये थी कि चार, पांच point .. बस यहा तक थी आगे नही। अब आप देखिये, बजाये spiritual के वो हुआ death हुआ जा के । तो बात ये है कि उसकी direction wrong थी, और कोई बात नही थी। power थी उसमें। पंच अग्नि विद्या के बारे मे ये लालाजी ने कहा था के ये master था पंच अग्नि विद्या का।
अच्छा और एक किसी पंडित ने question किया था ... में, तो वहा पर बहुत देर तक उसको समझाया था। हमे अगर हमने तमाम लोगों से पूंछा थोड़ा hint हमें मिल जाये, हम develop कर देंगे और जब hint नही मिलता तो हम develop नही करते। थोड़ा सा hint। एक दो sentence उनके thought मे हम develop कर देंगे । उसे five fires कहा गया है वेदांत में और इसी को बताया यही गया था यही पंच अग्नि है। तो बात यह है, हमारे यहा ये तो हम समझते भी है कि कुल सैर, कुल power मगर उसमे इस्तमाल उस हद तक नही कर सकते ताकि ... । अब, अब ये वजह नही कि safeguard life के

लिये है या काहे के लिये है ये तो हमे कुछ पता नही चलता । सब बिल्कुल खुला होगा, बिल्कुल divine होगा, हर चीज़ पूरी होगी, कोई चीज़ कमी नही होगी। मगर ये, ये display क्यो नही कर पाते? ये हमारे अब तक समझ नही आया।

----- जवाब आ गया आज, इसी वक्त। बतादे जवाब?

अभ्यासी: जी, बताईये।

बीच में nucleus जो होता है, जो सब को force पैदा करता है, उस पर काबू नही होता। बीच मे दर्म्यांन जो life समझ ले जैसे heart जो है हमारी life तो वैसी एक heart समझ लो बीच मे होता है एक cell के । अच्छा उसको काबू में पूरी तौर से नही, नही हो पाता। अच्छा हम क्या करते है, हर case मे ये करते है, हम उसको, उसको जो है, उसको invoke करते है । उसी, उसी बीच को लेते है invoke करते है, इसिलिये कि वो, वो है master cell कहना चाहिये उसे, master cell है। master cell पर आपने काबू कर लिया अब वो तमाम expansion होना शुरू हो गया। हम अकसर करते है, सैर करने मे हम देखा कि देर लग रही है, तो उसी को, उसी को invoke कर दिया मगर ये कि पूरी तौर से .., अब हमें ख्याल हुआ कि पूरी तौर से कर दे वही powers पैदा हो जायेंगी। अब ये idea..। अगर पूरी तौर से वही master cell को invoke कर दे तो वही powers पैदा हो जायेंगी। ये अब ये बता भी दिया। ये reason है। फिर miracles भी हो जायेंगे, फिर जाने क्या क्या पैदा हो जाये।

एक साहब आये.. वो पंडितजी नही वो, गाने वाले भी वो.. तो वो काली की उपासना करते तो हमने उनसे ये पूँछा कि आप God चाहते है, power चाहते है? और बाकी बताते रहे, हम कहा, हम God चाहते है तो come to SriRamchandra Mission, God चाहते है, power चाहते है कही और जाये। तो हमने उनसे ये पूंछा था। हमने कहा था कि देखो कितने अफ़सोस कि बात है, कि really ये functionaries of nature है। They are public servant. और वो हम उनको अपना Master समझते लेते है। That is the mistake. कि वो

अपने जैसे वज़ीर है और prime minister है ये सब, असल में public servant है ये । अपना function वो कर रहे है। अच्छा और हम उनको Master समझ लेते है। और जनाब खत्म हो गये साहब। That is the mistake. We do not want to be subdued by any of His powers but except God । तो हमने साहब..हमने ये कहा कि साहब Master- Master नही हुआ। जो असल में Master है, उसको, उस तरफ हम क्यो न जाये। हमने उससे ये पूंछा था, कि अगर काली इस वक्त आप के पास आ जाये, यानी यहा आ जाये तो आप पहचान सकते है या नही? तो उन्होनें कहा कि नही । काली, कही भी immediate हम call करते, आती अब हमारी इतना vision तो improve होता, ऐसे तो आती नही कि आप पहचान लेते। हा, कमरे का रंगत बदल जाती, भई इससे atmosphere तो बदल जाता उसका असर होता । उन्होने कहा नही।....

****